SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

l{e] y?k rFkk eè;e miØek e efgyk m|fe;k dh Hkkxhnkjh dk fo'y"k.k

nhfidk] शोधार्थी, अर्थशास्त्र विभाग
lrk"k tu] (Ph.D.), शोध निर्देशक, अर्थशास्त्र विभाग
y[ku pkèkjh] (Ph.D.), अर्थशास्त्र विभाग
कल्याण स्नातकोत्तर महाविद्यालय, भिलाईनगर, सेक्टर 7, भिलाई, दुर्ग, छत्तीसगढ़, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Authors
nhfidk] शोधार्थी, अर्थशास्त्र विभाग
lrk"k tu] (Ph.D.), शोध निर्देशक, अर्थशास्त्र विभाग
y[ku pkèkjh] (Ph.D.), अर्थशास्त्र विभाग
कल्याण स्नातकोत्तर महाविद्यालय, भिलाईनगर, सेक्टर 7, भिलाई, दुर्ग, छत्तीसगढ़, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 17/02/2023
Revised on : -----
Accepted on : 24/02/2023
Plagiarism : 02% on 17/02/2023

Plagiarism Checker X - Report
Originality Assessment
Overall Similarity: 2%
Date: Feb 17, 2023
Statistics: 65 words Plagiarized / 3657 Total words
Remarks: Low similarity detected, check with your supervisor if changes are required.

'kks/k lkj

उद्यमिता एक ऐसा क्षेत्र है जिस ओर महिलाएं लगातार आकर्षित हो रहीं हैं। उद्यमी वह अभिकर्ता है जो एक देश की आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। उद्यमी कोई भी हो सकता है, पुरुष उद्यमी या महिला उद्यमी। दोनों ही देश की अर्थव्यवस्था के लिए इंजन का कार्य करते हैं। पिछले कुछ दशकों में महिलाओं ने व्यवसायों की ओर अपनी रुचि दिखाई है तथा महिला स्वामित्व वाली व्यवसायों की संख्या में निरंतर वृद्धि देखने को मिल रही है। महिला श्रम मुख्यतः सूक्ष्म, लघु तथा मध्यम उपक्रम क्षेत्रों की ओर प्रोत्साहित हो रही हैं। उद्यमों का विकास आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह समग्र औद्योगिक विकास से प्रत्यक्षतः जुड़ा है। महिलाओं की राय है कि पारंपरिक कृषि की तुलना में सूक्ष्म, लघु, तथा मध्यम उपक्रमों में उनकी आर्थिक स्थिति में सुधार की बेहतर संभावनाएं हैं। अतः महिलाओं को उद्यमी के रुप में स्थापित करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। प्रस्तुत शोध पत्र भारत में सूक्ष्म, लघु तथा मध्यम उपक्रमों में महिलाओं की भागीदारी के आंकड़ो का विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

e[; 'kCn

l{e] y?k rFkk eè;e miØe] rduhdh çxfr] foÙkh; leL;k,] fuos'k dh jkf'k] okf"kd dkjksckj-

ifjp;

महिलाओं की भागीदारी एक परिवार तथा समाज के विकास में हमेशा महत्वपूर्ण रही है। "नारी अस्य समाजस्य कुशलवास्तुकारा अस्ति" अर्थात् वैदिक काल में नारी का सम्मान समाज के कुशल वास्तुकार के रुप में

किया जाता था। वर्तमान में महिलाएं अनेक प्रकार की सामाजिक बाधाओं को तोड़ने का प्रयास कर रही हैं जो उनकी प्रगति में बाधक है। यह स्वीकार किया गया है कि महिलाओं को शिक्षा के माध्यम से तथा आर्थिक रुप से आत्मनिर्भर बनाकर उन्हें सशक्त किया जा सकता है।

एक गृहणी की छवि से निकलकर उद्यमी के रुप में महिलाएं अपनी भूमिका को परिवर्तित कर रही है। महिलाओं ने उ़द्यमिता के क्षेत्र में कदम रखा है, जिसे केवल पुरुषो का गढ़ माना जाता है परन्तु महिलाओं ने इस मिथक को भी असत्य सिद्व किया। उद्यमिता एक ऐसा क्षेत्र है जिसमें महिलाएं आकर्षित हो रही है। महिला स्वामित्व वाले व्यवसायों की संख्या में निरंतर वृद्वि देखने को मिला हैं। उद्यमी वह अभिकर्ता है जो एक देश के आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है तथा वह समग्र औद्योगिक विकास से प्रत्यक्षतः जुड़ा हैं।

शुम्पीटर ने उद्यमी की पहचान को एक नया आयाम प्रदान किया है। शुम्पीटर ने परिभाषित किया है कि "एक अग्रिम अर्थव्यवस्था में एक व्यक्ति जिसने अर्थव्यवस्था में कुछ नया पेश किया, वह उद्यमी है।" तकनीकी प्रगति और आर्थिक विकास के तंत्र की हमारी समझ में शुम्पीटर का योगदान व्यापक रुप से मान्यता प्राप्त है। आर्थिक विकास के सिद्वान्त में उन्होनें आर्थिक विकास के प्रमुख कारक के रुप में उद्यमी की भूमिका पर जोर दिया है। अतः महिलाओं को उद्यमी के रुप में स्थापित किया जाना चाहिए।

भारत जैसी विकासशील अर्थव्यवस्था में सशक्त महिला की भागीदारी से उत्पादकता में वृद्धि सुनिश्चित है। पिछले कुछ दशकों से महिलाओं की आर्थिक स्थिति को सशक्त बनाने के लिए रणनीतियों में वृद्धि देखी गई है, विशेषकर विकासशील देशों में छोटे तथा अनौपचारिक क्षेत्र के उद्यमों को बढ़ावा देकर महिलाओं को प्रोत्साहित किया जा रहा है। सूक्ष्म, लघु तथा मध्यम उपक्रमों में महिलाओं की भागीदारी बढ़ रही है क्योंकि महिलाओं की राय है कि पारंपरिक कृषि की तुलना में सूक्ष्म, लघु तथा मध्यम उपक्रमों में उनकी आर्थिक स्थिति में सुधार की बेहतर संभावनाए हैं। वर्तमान परिदृश्य यह भी है कि महिलाएं श्रम शक्ति का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं और उनकी आर्थिक भूमिका के मूल्य को विकास के ढांचे से अलग नहीं किया जा सकता है।

efgyk m|eh dk vFkZ

महिला उद्यमी का अर्थ किसी भी स्थान, क्षेत्र, राज्य या देश की ऐसी मूल निवासी महिला जिन्होनें भारतीय कंपनी अधिनियम के तहत निगमित कंपनी के मामले में न्यूनतम 51 प्रतिशत सदस्य और सोसायटी अधिनियम के तहत गठित सोसायटी के मामले मे न्यूनतम 51 प्रतिशत सदस्य स्थानीय महिलाएं होनी चाहिए। उद्योग में कुल रोजगार का न्यूनतम 50 प्रतिशत प्रबंधकीय कुशल और अकुशल श्रेणियों में महिलाएं होनी चाहिए। (छ.ग. राज्य औद्योगिक नीति 2019–24)

भारत सरकार द्वारा परिभाषित–"एक महिला को उद्यमी के रुप में तब परिभाषित किया जाता है, जब उद्यम महिला के द्वारा नियंत्रित और अधिकृत हो और जिसमें मूलधन का कम से कम 51 प्रतिशत वित्तीय हित हो तथा महिलाओं को कम से कम 51 प्रतिशत रोजगार प्रदान करता हो।"

सरल शब्दों मे महिला जो स्वयं का व्यवसाय शुरु करती है, संसाधनों द्वारा उत्पादन करती है, व्यवसाय का प्रबंधन करती है, जोखिम उठाती है, नए रोजगार का सृजन करती है, आय का सर्जन करती है, अपनी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करती है तथा अन्य को भी प्रेरित करती करती है, वह महिला उद्यमी कहलाती है।

'kksèk lkfgR; dk iqu£oyksdu

furs'k dqekj rksj 2021% सूक्ष्म लघु और मध्यम आकार के उद्यम गरीबी और लैगिंक असमानता के खिलाफ लड़ते हुए महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते है। विकासशील देशो में नई नौकरियों का सृजन हुआ है। नवाचार द्वारा आर्थिक विकास को गतिशीलता मिली है। अतः महिला उद्यमियो को सूक्ष्म लघु और मध्यम आकार के उद्यमों में बढ़ावा देकर उनको ना केवल सशक्त बनाया जा सकता है, बल्कि सूक्ष्म, लघु और मध्यम आकार के उद्योगों का विकास करके देश की आर्थिक प्रगति को बढ़ाया

जा सकता है।

Mk- ehu JhokLro 2021% महिलाएं कुल जनसंख्या का केवल 50 प्रतिशत का प्रतिनिधित्व करती है। इसके बावजूद हमारे सामाजिक विकास में वे 75 प्रतिशत से अधिक योगदान देती है। पूरे विश्व में महिलाओं की स्थिति को सशक्त बनाने पर जोर दिया जा रहा है। शिक्षा सामाजिक परिवर्तन का सबसे महत्वपूर्ण साधन है। महिलाएं गृहणी होने के साथ–साथ एक शिक्षक, शोधकर्ता, उद्यमी, और प्रशासक भी हो सकती है। यह सर्वविदित है कि किसी भी राष्ट्र के विकास में महिलाओं का अहम योगदान होता है, अतः उनका सशक्तिकरण अनिवार्य है। यह बहुआयामी प्रक्रिया है जो महिलाओं को सक्षम बनाती है।

Mk- Jhi.kh ch- c:vk 2020% महिला उद्यमिता को आज ग्रामीण और शहरी गरीबी की समस्या के समाधान की कारगर रणनीति के रुप में देखा जाने लगा है। देश में आर्थिक विकास और स्थिरता में सुधार के पीछे महिला उद्यमियों की संख्या में निरंतर बढ़ोतरी होना एक प्रमुख कारण है। महिला उद्यमी अन्य महिलाओं को भी कारोबार शुरु करने के लिए प्रेरित करती है। इससे महिलाओं के लिए और अधिक संख्या में रोजगार के अवसर उत्पन्न होते है जिससे अंततः श्रम शक्ति में स्त्री–पुरुष असमानता कम करने में मदद मिलती है। आज समय की मांग है कि उद्यमियों को सही तरीके से तैयार किया जाना चाहिए जिससे कौशल विकसित हो सके तथा वैश्विक बाजारों के बदलते रुझानों, चुनौतियो से निपट सके।

,u-oh -ekèkjh 2018% महिलाओं की उद्यमशीलता परिवारों और समुदायों के आर्थिक कल्याण गरीबी उन्मूलन और महिला सशक्तिकरण में योगदान दे सकती है। महिला उद्यमियों को आर्थिक विकास का एक महत्वपूर्ण स्रोत माना गया है। वे स्वयं और दूसरों के लिए रोजगार का सृजन करती है साथ ही प्रबंधन, संगठन और व्यवसाय से जुड़ी समस्याओं के लिए समाज को समाधान प्रदान करती है फिर भी भारतीय उद्योग क्षेत्र में उन्हे बहुत अधिक प्रतिनिधित्व नहीं मिलता। इस ओर सशक्त कदम उठाया जाना अभी भी अपेक्षित है।

Mk- cchrk nc 2016% यह रिसर्च प्रोजेक्ट छत्तीसगढ़ में आदिवासी समूहों की महिला उद्यमियों पर केंद्रित था। आदिवासी महिला उद्यमियों का छत्तीसगढ़ राज्य की सांस्कृतिक तथा परंपरागत समाज में एक मजबूत स्थिति है। इन महिलाओं की कौशल विकास और शैक्षणिक अवसरों को विकसित कर इन्हें उद्यमिता के क्षेत्र में पहुंच देना चाहिए। महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण का एक महत्वपूर्ण तथ्य उद्यमिता है। उन्हें आर्थिक रुप से मजबूत बनाकर सशक्त बनाया जा सकता है। देश में मजबूत आर्थिक विकास उद्यमिता द्वारा होती है। देश में गरीबी उन्मूलन, कौशल विकास, आत्मनिर्भरता के सर्वोतम तरीकों में से एक उद्यमी गतिविधियों द्वारा महिलाओं का आर्थिक सशक्तिकरण है।

Mk- ehu egÜojh 2015% इस लेख का उद्देश्य सामान्य रुप से महिला उद्यमियों के बारे में पूर्व के साहित्य का अध्ययन था। साहित्य समीक्षा द्वारा स्पष्ट हुआ कि महिला उद्यमियों को विभिन्न प्रकार की समस्या तथा चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। महिला उद्यमों को वित्तीय सुविधा में बाधा, तकनीकी बाधाओं, सामाजिक मुद्दों, श्रम आपूर्ति में कमी एक प्रतिबंधात्मक वातावरण प्रदान कर रही है। इस कारण स्पष्ट लक्ष्य होने के बावजूद महिला उद्यमियों का सफल होना मुश्किल हो रहा है। विभिन्न लेखकों ने प्रशिक्षण की आवश्यकता के साथ–साथ महिला उद्यमियों को वित्तीय सहायता का उल्लेख किया है। यह भारतीय महिला को देश के सकल घरेलू उत्पाद में प्रमुख हिस्सेदारी रखने के लिए प्रेरित कर सकती है इसके लिए महिला उद्यमों की बाधाओं तथा चुनौतियों की ओर ध्यान दिया जाना आवश्यक हैं।

dekjh LohVh xIrk 2015% इन्होंने अपने अध्ययन में भारत में महिला उद्यमियों के लिए अवसर तथा उनके समक्ष आने वाली चुनौतियों पर शोध किया है। यदि उद्यमशीलता की बात की जाए तो महिला उद्यमी अभी तक एक अनछुआ पहलू ही है। उद्यमों की स्थापना के लिए महिला उद्यमी एक महत्वपूर्ण संसाधन है। इनका अध्ययन महिला उद्यमियों के समक्ष अपने वाली चुनौतिया, समस्याओं तथा उनके द्वारा उद्यमिता के लिए क्या अवसर है पर केंद्रित किया है।

Mk- th- ey;knjh 2014¼ हम महिला उद्यमिता द्वारा महिला सशक्तिकरण के लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हैं। देश के आर्थिक विकास के लिए उद्यमिता का महत्वपूर्ण योगदान है और इस लक्ष्य को हासिल करने के लिए महिला उद्यमिता को एक साधन के रुप में देखा जा सकता है। अध्ययन से स्पष्ट है कि महिलाओं की भागीदारी सूक्ष्म, लघु तथा कुटीर उद्योगों में बहुत है। उद्यमिता द्वारा वे अपनी व्यक्तिगत स्थिति के साथ–साथ आर्थिक सहयोग, पूंजी निर्माण, नवप्रवर्तन, रोजगार सृजन, सामाजिक उत्थान, संतुलित क्षेत्रीय विकास स्तर में सुधार आदि अनेक सामाजिक आर्थिक पहलुओं में योगदान दे सकती है जिसके परिणामस्वरुप आर्थिक विकास तथा समृद्धि के साथ सशक्तिकरण के लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकता है। इतनी क्षमता के बावजूद भी महिला उद्यमियों को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। उन्हें संगठित करके उन सभी चुनौतियों का हल निकाल कर एक दूसरे के लिए उद्यमिता के लिए बेहतर वातावरण तैयार करने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए।

vk'kh"k dqekj 2014¼ लघु एवं सूक्ष्म उद्योगों में उद्यमशीलता के विभिन्न पहलुओं को दर्शाया है। लघु तथा सूक्ष्म उद्यम एक उभरती हुई प्रक्रिया है जो कम पूंजी कम जोखिम और शुरुआत में कम लाभ के साथ आरंभ होती है। सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यमों को ग्रामीण स्तर पर मजबूत कर हम भारतीय अर्थव्यवस्था को एक नया रुप दे सकते है जिसके लिए इस क्षेत्र में कुशल उद्यमियों की जरुरत महसूस होती है। इसके लिए महिला उद्यमियों को प्रेरित करना जरुरी है। मुख्य तौर से गृह उद्योग, खादी उद्योग एवं स्वयं सहायता समूह आदि को विकसित करने के लिए महिला उद्यमियों को बढ़ावा देना बहुत जरुरी हो गया है। ग्रामीण स्तर पर महिला उद्यमियों को सरकार द्वारा प्रशिक्षित कर उद्यमशीलता को विकसित किया जाना चाहिए क्योंकि प्रशिक्षित उद्यमशीलता ना होने के कारण सूक्ष्म, लघु तथा मध्यम उद्योग के संचालन मे भिन्न–भिन्न समस्याएं उत्पन्न होती है।

vuhrk Mh- ieh 2013¼ महिलाएं आज विभिन्न प्रकार के व्यवस्थाएं और सेवा के क्षेत्र में कदम रख रही है। लगभग सभी देशों की अर्थव्यवस्था में महिला स्वामित्व वाले व्यवसायों की संख्या में वृद्धि हो रही है। इनकी उभरती हुई क्षमता से समाज में आर्थिक स्थिति में सकारात्मक परिवर्तन हो रहे है। महिला उद्यमी वह है जो चुनौतियों को स्वीकार करके अपनी व्यक्तिगत आवश्यकताओं को पूरा कर रही तथा आर्थिक रुप से आत्मनिर्भर बन रही है। महिला उद्यमिता को सषक्त नेतृत्व, वित्तीय घाटा, योजनाबद्व प्रबंधन की कमी, स्वास्थ्य समस्याएं, सरकारी योजनाओं की अनभिज्ञता, ऋण वापसी की समस्या तथा शिक्षा की कमी यह सारे कारक है जो महिला उद्यमी को उद्यमशीलता में कुशल प्रदर्शन करने से रोक देते हैं।

'kks/k v/;;u ds mís';

1. सूक्ष्म, लघु और मध्यम उपक्रमों में महिलाओं की स्थिति, प्रस्थिति का विश्लेषण करना।
2. सूक्ष्म, लघु और मध्यम उपक्रमों में रोजगार के अवसरों की उपलब्धता का विश्लषेण करना।

'kks/k çfof/k

प्रस्तुत अध्ययन में आकड़ों का विश्लेषण करने के लिए सरल प्रतिशत आधारित गणना पद्धति का प्रयोग किया गया है।

vkdM+ksa dk laxg.k

शोध पत्र द्वितीयक समंको पर आधारित है। अतः द्वितीयक समंको द्वारा आकड़ों को एकत्रित कर उनका विश्लेषण किया गया है। इस कार्य हेतु आंकड़ो को प्रकाशित पत्रिकाओं, सरकारी रिर्पोटो, पुस्तकों, जर्नल सरकारी बेबसाइट्स द्वारा संकलित किया गया है। विश्लेषण में लिये गये आंकड़े विश्वसनीय स्त्रोतों द्वारा प्राप्त किये गये हैं। अतः यह शोधपत्र द्वितीयक आकड़ों के विश्लेषण पर लिखित है।

l{e] y?kq ,oa e/;e miØe

सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उपक्रम देश के आर्थिक, सामाजिक और क्षेत्रीय विकास को बढ़ाने का महत्वपूर्ण साधन है। सूक्ष्म, लघु और मध्यम उपक्रम मंत्रालय के वार्षिक रिपोर्ट 2011–12 के अनुसार, यह अनुमान है कि भारत में

एम.एस.एम.ई. के अंतर्गत महिलाओं का एक बड़ा समूह कार्यरत है और यह समूह अधिकाशतः असंगठित क्षेत्र में संलग्न है। एम.एस.एम.ई क्षेत्र में सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम शामिल है जिन्हें कुछ मापदण्डों के आधार पर वर्गीकृत किया जाता है। वर्ष 2018 से पूर्व एम.एस.एम.ई. उपक्रमों को 'निवेश की राशि' के आधार पर वर्गीकृत किया गया था। नियमों में परिवर्तन के बाद 'वार्षिक कारोबार' के मूल्य के आधार पर वर्गीकृत किया जाता है चाहे वे उद्यमी विनिर्माण या सेवा क्षेत्रों में संलिप्त हैं।

सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उपक्रम विकास अधिनियम, 2006 के अनुसार एम.एस.एम.ई. उपक्रमों का वर्गीकरण निम्नानुसार होगाः

उपक्रम (विनिर्माण तथा सेवा क्षेत्र)	निवेश–संयत्र और मशीनरी	वार्षिक कारोबार
सूक्ष्म उपक्रम	रु 1 करोड़ से अनधिक	रु 5 करोड़ अनधिक
लघु उपक्रम	रु 10 करोड़ से अनधिक	रु 50 करोड़ से अनधिक
मध्यम उपक्रम	रु 50 करोड़ से अनधिक	रु 250 करोड़ से अनधिक

vkdMksa dk fo'ys"k.k

वर्ष 2015–16 की अवधि के दौरान राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण (एन.एस.एस.) कार्यालय सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय द्वारा आयोजित राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण 73वें दौर के अनुसार एम.एस.एम.ई. की वितरण संख्या तालिका 1 में प्रदर्शित हैः

rkfydk 1

(लाख में)

क्षेत्र	सूक्ष्म उद्यम	लघु उद्यम	मध्यम उद्यम	योग	हिस्सा प्रतिशत
ग्रामीण	324.09	0.78	0.01	324.88	051
शहरी	306.43	2.53	0.04	309.00	049
समग्र	630.52	3.31	0.05	633.88	100

एम.एस.एम.ई. क्षेत्र में 633.88 लाख इकाइयां शमिल है। यह बड़े उद्योगों की तुलना में कम पूंजी लागत पर बड़े रोजगार के अवसर प्रदान करता है।

ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्र में एम.एस.एम.ई. उद्यम का प्रतिशत

rkfydk 2% वर्ष 2021–22 तक एम.एस.एम.ई. में पंजीकृत उद्यमों की संख्या

उपक्रम	संख्या	प्रतिशत
सूक्ष्म उपक्रम	87,04,675	95.49 प्रतिशत
लघु उपक्रम	3,73,456	4.09 प्रतिशत
मध्यम उपक्रम	36,951	0.40 प्रतिशत
कुल पंजीकृत उपक्रम	9,115,082	

(स्रोत : उद्यम पंजीकरण अधिकारिक वेबसाइट– सितम्बर 2022 तक)

rfydk 3% भारत में सूक्ष्म, लघु और मध्यम उपक्रम क्षेत्र में उद्यमों की अनुमानित संख्या (वर्ष 2021–22)

क्रियाशील क्षेत्र	उद्यमों की अनुमानित संख्या (लाख में)	हिस्सा
विनिर्माण	196.65	31 प्रतिशत
ट्रेड	230.35	36 प्रतिशत
सेवा	206.85	33 प्रतिशत
योग	633.88	100 प्रतिशत

(स्रोत : सरकारी वेबसाइट एम.एस.एम.ई. – सितम्बर 2022 तक)

भारत में सूक्ष्म, लघु और मध्यम उपक्रम क्षेत्र में उद्यमों की अनुमानित संख्या का प्रतिशत

l{e] y?k ,oa eè;e mçdeksa esa jkstxkj dh fLFkfr

उद्यम पोर्टल पर पंजीकृत हुए उपक्रमों में लगभग 6.36 करोड़ व्यक्तियों को रोजगार प्राप्त हुआ। पोर्टल में पंजीकृत उपक्रमों की संख्या 80,16,195 थी। यह आंकड़ा जुलाई 2020 की स्थिति में है।

तालिका 4

उपक्रम	2020–21	2021–22	कुल रोजगार प्राप्त व्यक्ति	प्रतिशत
सूक्ष्म	1,72,68,076	3,11,69,110	4,84,37,186	76 प्रतिशत
लघु	65,98,746	34,80,794	1,00,79,540	16 प्रतिशत
मध्यम	40,03,978	10,83,079	50,87,057	08 प्रतिशत
योग	2,78,70,800	3,57,32,983	6,36,03,783	

उद्यम पोर्टल पर पंजीकृत उपक्रमों में रोजगार प्राप्त व्यक्तियों का प्रतिशत

सूक्ष्म उपक्रमों के अंतर्गत सबसे अधिक लगभग 76 प्रतिशत व्यक्तियों को रोजगार प्राप्त हुए हैं।

वर्ष 2019–20 से 2021–22 के दौरान स्थापित नए इकाइयों की संख्या में भी वृद्धि रही जिनकी संख्या निम्न है:

तालिका 5

उपक्रम	2019 –20	2020 –21	2021–22	योग
सूक्ष्म	7,51,671	15,21,357	16,62584	39,35612
लघु	8,778	8,507	7107	24,392
मध्यम	446	567	345	1,358
योग	7,60,895	15,30431	16,70,036	39,61,362

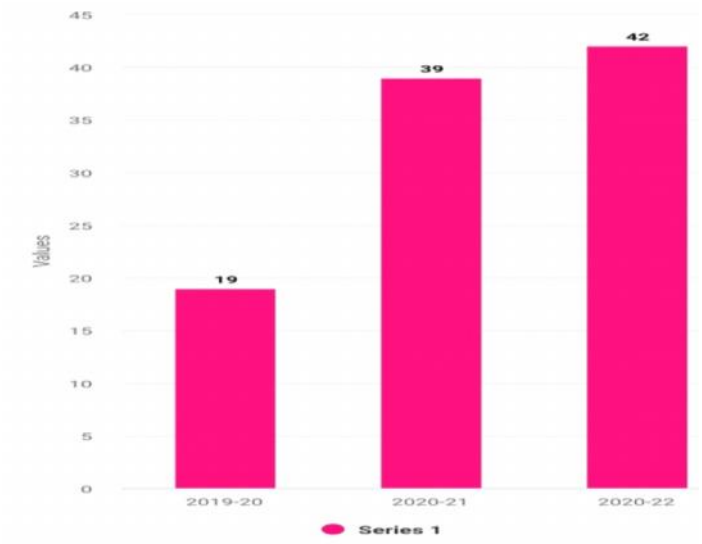

उपरोक्त आंकडों के विश्लेषण से स्पष्ट है कि सबसे अधिक स्थापित उद्यमों का प्रतिशत सूक्ष्म उपक्रम क्षेत्रों में है।

भारत सरकार अनेक, स्कीमों, योजनाओं के अंतर्गत महिलाओं को उद्यमिता के क्षेत्र में अवसर प्रदान कर रही है परिणामस्वरुप सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उपक्रमों में महिला उद्यमियों की भागीदारी बढ़ रही है, परन्तु यह संख्या अभी भी अपेक्षाकृत कम है।

rfydk 6% भारत में पुरुष और महिला स्वामित्व वाले उपक्रमों का वितरण प्रतिशत–शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्रों में

क्षेत्र	पुरुष	महिला	कुल
ग्रामीण	77.76	22.24	100
शहरी	81.58	18.42	100
कुल	79.63	20.37	100

(स्रोत : एमएसएमई रिपोर्ट 2019–20)

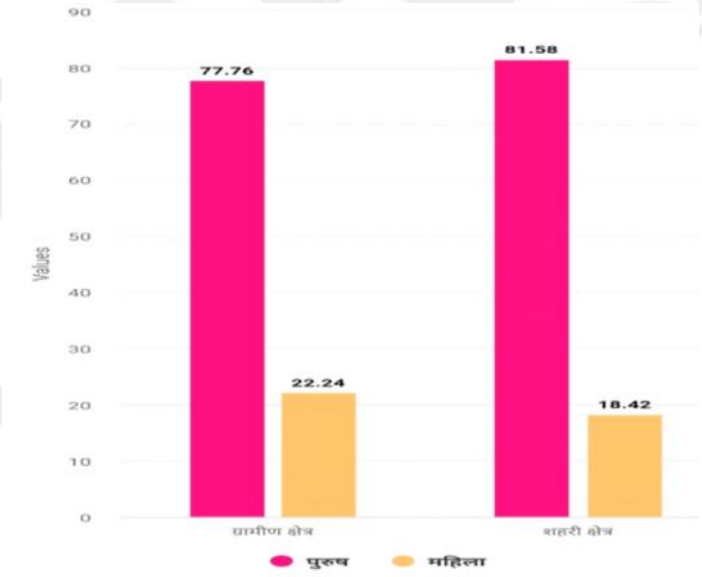

rkfydk 7% सूक्ष्म लघु तथा मध्यम उपक्रमो में वितरण प्रतिशत पुरुष तथा महिला स्वामित्व वाले उपक्रमो में

क्षेत्र	पुरुष	महिला	कुल
सूक्ष्म	79.56	20.44	100
लघु	94.74	05.26	100
मध्यम	97.33	02.67	100
कुल	79.63	20.37	100

(स्रोत : एम.एस.एम.ई.वार्षिक रिपोर्ट 2019–2020)

सूक्ष्म लघु तथा मध्यम उपक्रमो में वितरण प्रतिशत पुरुष तथा महिला स्वामित्व वाले उपक्रमो का प्रतिशत

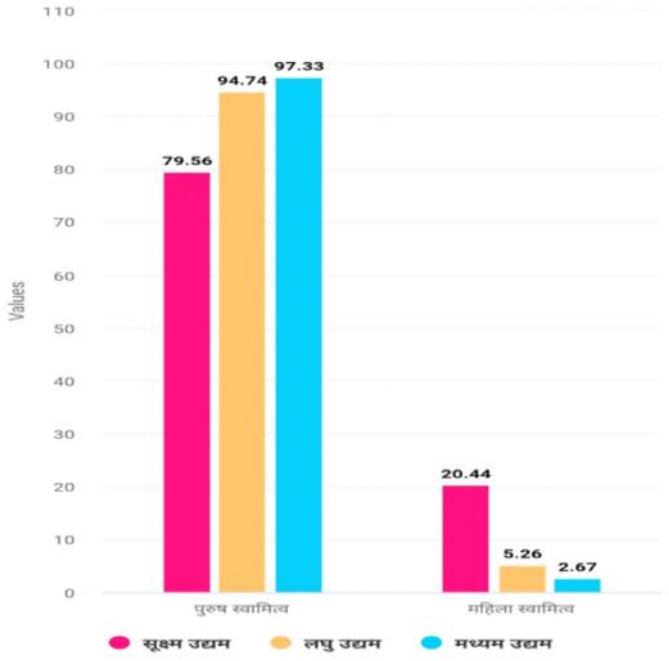

rfydk 8% लिंग के आधार पर स्थापित नवीन इकाइयां : वर्ष 2019–20 से 2021–22 के दौरान

वर्ष	क्षेत्र	पुरुष स्वामित्व	महिला स्वामित्व	अन्य	अनाम	योग
2019–20	सूक्ष्म	595348	1,48,658	5,017	2648	751,671
	लघु	7290	1177	271	40	8778
	मध्यम	380	32	26	8	446
2020–21	सूक्ष्म	1182,985	3,24,517	9,874	3,981	15,21,357
	लघु	7205	1110	153	37	8,507
	मध्यम	495	49	15	8	567
2021–22	सूक्ष्म	12,98,199	3,53,298	11,087	0	16,62,584
	लघु	6070	964	73	0	7107
	मध्यम	300	37	8	0	345
योग	सूक्ष्म	3076532	826473	25,978	6629	3935612
	लघु	20565	3251	499	77	24392
	मध्यम	1175	118	49	16	1358
	महायोग	30,98,272	829842	26,526	6,722	39,61,362

(स्रोत : एम.एस.एम.ई.उद्यम पंजीकरण पोर्टल 2019–20 से 2020–21)

उपरोक्त तालिका पिछले 3 वर्षो में लिंग आधारित नवीन इकाइयों की स्थापना और उद्यम पोर्टल पर पंजीकृत एम.एस.एम.ई इकाइयों को प्रदर्शित करता है।

पिछले 3 वर्ष के दौरान स्थापित नवीन इकाइयों का प्रतिशत लिंग के आधार पर

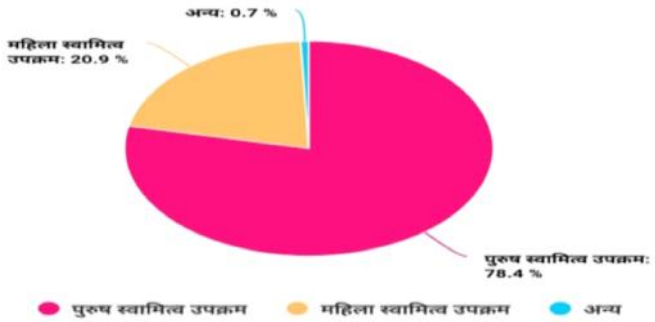

लगभग 39.61 लाख इकाइयां पंजीकृत हुई है, जिसमें से 78.2 प्रतिशत इकाइयां पुरुष स्वामित्व, 20.9 प्रतिशत ईकाइयां महिला स्वामित्व तथा 0.7 प्रतिशत अन्य की है।

वर्ष 2019–20 से 2021–22 के मध्य महिला स्वामित्व वाले उपक्रमों का प्रतिशत सूक्ष्म लघु तथा मध्यम उपक्रमें में

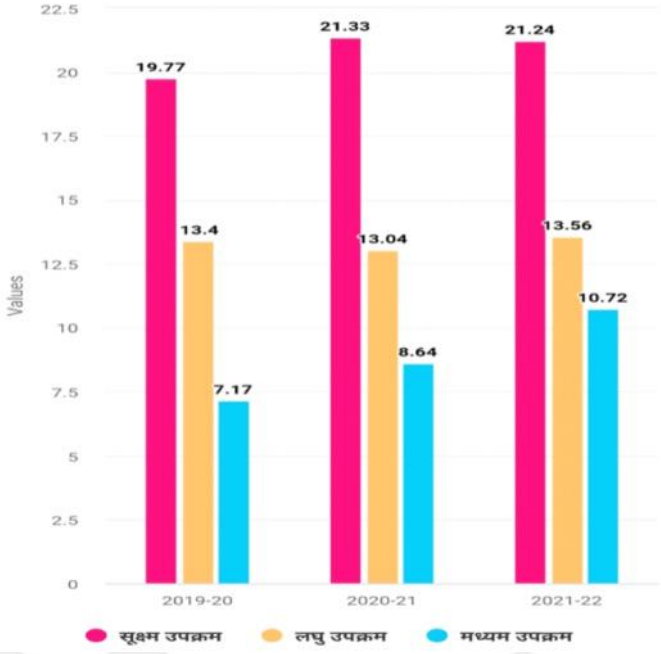

पिछले 3 वर्षों के आंकड़ों का विश्लेषण करने से ज्ञात हुआ कि सूक्ष्म, लघु तथा मध्यम उपक्रमों में महिला स्वामित्व के उद्यमों की संख्या में वृद्वि हुई है जिसमें से सूक्ष्म उपक्रम क्षेत्रों में यह भागीदारी अधिक है तथा लघु उद्यम क्षेत्रों में महिलाओं की उपस्थिति पुरुषों की तुलना में बहुत कम है। अंततः निष्कर्ष यह है कि सूक्ष्म, लघु तथा मध्यम उपक्रम क्षेत्रों में केवल सूक्ष्म उद्यमों में ही महिलाओं की भागीदारी अधिकतम हैं परन्तु फिर भी यह संख्या पुरुषों के मुकाबले कम है।

fu"d"k

किसी भी देश की अर्थव्यवस्था की मजबूती एवं संवृद्धि के लिए औद्योगीकरण आवश्यक होता है तथा औद्योगीकरण की मजबूती के लिए सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम क्षेत्र के उपक्रमों की संख्या में वृद्वि होना आवश्यक है। पिछले कुछ दशकों से दुनियाभर में महिला स्वामित्व वाले उद्यमों अर्थात् महिला उद्यमियों की संख्या लगातार बढ़ती जा रही है। अब महिलाएं उ़द्यमिता की ओर तेजी से आकर्षित हो रहीं हैं। यद्यपि यह आंकड़ों से स्पष्ट है कि महिला उद्यमियों की वृद्धि संतोषजनक नहीं है, फिर भी सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम क्षेत्र के उपक्रमों में महिलाओं की हिस्सेदारी

या भागीदारी लगातार बढ़ रही है।

आंकड़ें बताते हैं कि महिलाएं सूक्ष्म उपक्रमों में अधिक रुचि लेती दिखाई देती हैं। अन्य क्षेत्रों जैसे लघु उद्यम तथा मध्यम उद्यम के क्षेत्रों के लिए भी महिलाओं को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। निःसंदेह महिलाओ को उद्यमी के रुप में कई बाधाओं तथा समस्याओं का सामना करना पड़ता है, जैसे–सामाजिक रुढ़िवादिता, पारिवारिक समस्याएं, वित्तीय समस्याएं, बाजार का ज्ञान आदि अनेक कारक हैं, जो महिलाओं को उद्यमिता की ओर बढ़ने से रोकते हैं। सरकारी योजनाओं का ज्ञान तथा महिला उद्यमी को इन योजनाओं का लाभ लेने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए। ऋण सुविधा, प्रषिक्षण आदि के लिए शिविर लगाकर उन्हें जागरुक करना चाहिए तथा इन सब प्रक्रियाओं को सरल तथा सुविधापूर्ण बनाना चाहिए जिससे महिलाओं की भागीदारी, सूक्ष्म, लघु तथा मध्यम उपक्रमों में समान रुप से बढ़ सके तथा अर्थव्यवस्था को महिला श्रम बल का लाभ मिले। इससे देश के आर्थिक विकास के साथ–साथ महिलाओं की सामाजिक स्थिति में सकारात्मक विकास होगा तथा समाज सुदृढ़ बनेगा।

I inHk I iph

1. तंवर, नितेश कुमार और कुमार लोकेश (2021), कृषि उद्यमिता के माध्यम से महिला सशक्तीकरण, राजस्थान प्रताप खेती, 7–8
2. Kumar,Surendra and Raghuvanshi, Anvita.(2021). Challenges of Women Enterpreneurs in Rajsthan: An Enprical Study. Industrial Engineering Journal, 14 (6), 5-10
3. श्रीवास्तव, मीनू (2021), सामुदायिक विज्ञान शिक्षा : समानुपातिक महिला सशक्तिकरण की ओर सतत् प्रयत्नशील राजस्थान खेती प्रताप, 5–6
4. अहिरवाल, सुजाता परी और जैन, प्रो. जिनेन्द्र कुमार. (2021). महिला उद्यमिता और सरकारी भूमिकाः वर्तमान परिदृष्य भारत के संदर्भ में,JETIR, 8(9), 63-73
5. बरुआ, श्रीपर्णा बी., (2020), महिला उद्यामियों हेतु अवसर और चुनौतियां, *कुरुक्षेत्र,* फरवरी, 48–51
6. माधुरी, एन,बी, (2018). महिला उद्यमिता आर्थिक सषकितकरण का जरिया, *योजना,* अक्टूबर, 17–20
7. चन्द्रा, तूलिका. (2018). कौशल विकास और महिला सशक्तिकरण. *शोध मंथन,* जून, 122–126
8. Kaviarasu, S.John, and Francis, C. (2018). Women Enterpreneurship Devlopment in India; challenges and Empowerment .IJSRR, 7(4), 2295 – 2303.
9. Susruthan, N.K.and Priyadharshany, A. Jency. (2018). Role of Women Enterprenearship. International journal of Pure and applied mathematics, 120(5), 4199-4210.
10. Kaur, Gurveen. (2017). Financial Inclusion of women Enterpreneure in India .IJEDR, 5(2), 1529-1539
11. Tiwari, Neha. (2017). Women Enterpreneurship in India – a Literature Review. amity journal of Enterpreneurship, 2(10 , 47-60
12. Dubey, Babita. (2016). Sustainable Devlopment Regarding Women entrepreneurship (With Special Reference to Tribal women of Chhattisgarh), UGC Minor Research Project, 2014-16.
13. Anna, Sinyutina. (2016). The Pecullarities 07 female enterprenearship in small business sector of Russia and the Netherlands. Thesis PHD.
14. Maheswari, Meenu, and Sodani, Ms.Priya. (2015). Women Enterprenearship & A Literature Review. IOSR-JBM. 17 (2) 6-13.

15. Gupta, Ms. Sweety, and Agarwal, ms.Aanchal. (2015). Opportunities and challenges faced by women Enterpreneurs in India. IOSR-JBM, 17(8), 69-73.

16. Kritikos, Alexander S. (2014). Enterpreneurs and their impact on jobs and economic growth. IZA world of Labor, Wol.iza.org.

17. Borab, Ajit. (2014). Women empowerment through self help Groups–a case study of Barhampur Devlopment Block in Nagoon Distrct of Assam –IOSR –JEF 4 (3), 56-62.

18. कुमार, आशीष. (2014). उद्यमशीलता के द्वारा सूक्ष्म एवं लघु उद्योगों का विकास एक अन्वेषणात्मक अध्ययनः उत्तर प्रदेश के संदर्भ में, *Socrates*, 2(1), 167-183.

19. R. Bharthvajan. (2014). Womwne Entrepreneurs &Problems of Women Entrepreneurs.IJIRSET, 3 (9) 16104-16110.

20. Malyadri, G. (2014). Role of Women Enterpreneurs in the economic Devlopmentof India. India Journal of Research, 3(0), 104-105.

21. Singh, Ranbir. (2014). Changing status of Women Enterprenears in Himachal Pradesh. European Academic Research, 2(4), 5721-5746.

22. Shah, Hina. (2013).Creating an Enebling Environment for women's Enterprnearship in india. ESCAP.

23. Pharm, Anitha d. and Sritharan, Dr. R. (2013). Problem being faced by Women Enterpreneurs in Rural Areas. Ijes, 2 (3), 52-55.

24. Samani, Veena.S. (2008). A study of Women Enterpreneurs Engaged in Food Processing, thesis Phd, Sourahtra University.

25. Bruni, Attilai. Gherrdi, Silvia and Poggio, Barbara. (2004). Enterprenear- mentality, gender and the study of women enterprenars. IOCM, 17(3), 256-268.

26. Website: https.//MSME.gov.in.

27. Annual Reports: MSME 2019-20.

28. NSSO 73rd round Report 2015-16.

29. CSO and ministry of statistics & program Implemention.

30. Udayam Registrations official portal site.

****